☆ गान्धार शैली :- गांधार की राजधानी तक्षशिला कला का प्रमुख केन्द्र थी और व्यापार की बड़ी और महत्वपूर्ण मण्डी थी। यहां सलेटी पत्थर की मूर्तियों का बहुतायत से निर्माण हुआ। तक्षशिला से शरीर सिरकप तथा सिरयुक्त तीन स्थानों से कलात्मक अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहां से मिट्टी के बर्तनों उत्कीर्ण टुकड़े मिट्टी के खिलौने पत्थर की तश्तरी हाथी दांत, अस्थि आदि से बनी सामग्री सोने चांदी के गहने आदि प्राप्त हुए हैं।

☆ गान्धार कला में बुद्ध मूर्तियों का प्रारम्भ और विकास :- इस कला शैली के अस्तित्व में आने से पहले जातक कथाओं व बुद्ध के जीवन की घटनाओं को पत्थर पर उकेरा लेकिन बुद्ध को मानव के रूप में मूर्ति न बनाकर उनकी उपस्थिति प्रतीकों के माध्यम से की जाती थी जैसे हाथी वृषभ अश्व बोधिसत्व छत्र, स्तूप चरण चिह्न धर्म चक्र खाली सिंहासन आदि लेकिन कुषाण युग तक सेमन शैली और आदर्शों को सामने रखकर वे बुद्ध के निर्माण में प्रवृत्त हुए। धीरे-धीरे इस काल में शीघ्र ही ओज और यौवन का संचार हुआ। इसी समय मथुरा सम्प्रदाय की बुद्ध मूर्तियों के प्रभाव से गन्धार में भी बुद्ध की हस्त मुद्राओं पर विशेष ध्यान दिया गया। गोद में रखे गये दोनों हाथ व बन्द आँखें 'ध्यानावस्था' पहली तथा बीच की अंगुलियों को जोड़कर उठे हुए हाथ तक नीचे की ओर अंगुलियाँ उठी हुई 'अभय' हथेलियां एक दूसरे के ऊपर चक्र घुमाने की मुद्रा में उपदेश या धर्मचक्र प्रवर्तन तथा दाहिनी हथेली से पृथ्वी का स्पर्श प्रबोध का प्रतीक माना गया।

☆ गान्धार कला की विषय वस्तु :- सम्राट अशोक के काल में बौद्ध धर्म ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया। कुषाण शासक प्रथम कनिष्क के बौद्ध धर्म धर्म के प्रति झुकाव के कारण उसके शासन काल में

Scanned with CamScan

Scanned with CamScanner

PAGE ____
DATE __/__/____

बौद्ध विषयों का व्यापक रूप से शिल्पांकन होना स्वाभाविक था। गान्धार शैली पर युनानी कला का प्रभाव है। जो भारतीय मूर्तिकला के प्रभाव से अलिप्त है। गान्धार कला का विषय बौद्ध है। और एकमात्र बुद्ध की लीलाओं से अनुप्राणित है। यहाँ एक ओर बुद्ध के जन्म 'निष्क्रमण' "संबोधिलाभ" धर्म-चक्र प्रवर्तन' 'परिनिर्वाण' जैसे बौध विषयों का अंकन है तो दुसरी ओर नतमस्तक वाले काल्पनिक पशु, मुकुटयुक्त देवी नानी व देवी रोधिना, सेमा, देवी मिमिणा, मालाधारी यक्ष आदि पुरानी रोमन मूर्तियों के निर्माण में कलाकार ने हस्त कौशल प्रदर्शित किया है।

बौद्ध विषयों में मायादेवी का स्वप्न उनका लुम्बिनी उद्यान में जाना उनके सप्तपदी, सिद्धार्थ का जन्म, सिद्धार्थ का बोधिसत्व रूप, बोधिसत्व की शिक्षा, सिद्धार्थ व यशोधरा विवाह, संसार त्याग के लिए देवी की सिद्धार्थ से प्रार्थना आभूषण आदि ग्रहण करना हुआ। चार कन्याओं का बुद्ध के प्रलोभन, बुद्ध का कपिल वस्तु में आगमन, राहुल को दीक्षा देना, बुद्ध के शव का अग्नि कर्म धातुओं का बटवारा, धातुओं का बटवारा, धातु [illegible] पूजा, बुद्ध के जन्म के 16 दृश्यों का अंकन हुआ है।

गान्धार कला के अन्तर्गत आपान गोष्ठी नृत्य गीत, वाद्य संगीत, खान पान विलास, लीलाओं के चित्रयुक्त सोने चाँदी की तश्तरीयाँ प्राप्त हुई। इस कला में नारी मूर्तियों का प्रायः अभाव है। जो नारी मूर्तियां है वे प्रायः बुद्ध की माता मायादेवी का ही अंकन करती है। बौद्ध धर्म में नारी का कोई विशेष स्थान था। केवल कुछ ही नारी मूर्तियां बन सकी।